श्री विद्यासागराय नमः (1)

पाठशाला निबंध

निम्नलिखित विषयों को अपने निबंध में मुख्य रूप से समाहित करें।

(1) पाठशाला का उद्देश्य
(2) पाठशाला के अध्यापक की विशेषताएं
(3) वर्तमान समय अनुसार किस पद्धति से बच्चों को पढ़ाया जाए

(1) <u>पाठशाला का उद्देश्य</u> ⇒ धर्म और संस्कृति की रक्षा के लिए पाठशाला सर्वोत्तम माध्यम है। संस्कृति को आगे बढ़ाने के लिए हमें पाठशाला का निर्माण करना आवश्यक है जब हम अपने धर्म और संस्कृति को पुनः जीवित करते हैं। तो वह उद्देश्य पाठशाला के माध्यम से पूर्ण होना सम्भव होता है और जैन के संस्कारों को छोटे-छोटे बच्चों में गर्भित करना यह हमारा सर्वोत्तम अधिकार है। तो पाठशाला को हमें अपने जीवन में आगे लाना है और अपने ज्ञान विकास की पवित्र स्थली हमारी पाठशाला से लेना है।

(2) <u>पाठशाला में क्या सिखाया जाता है।</u>

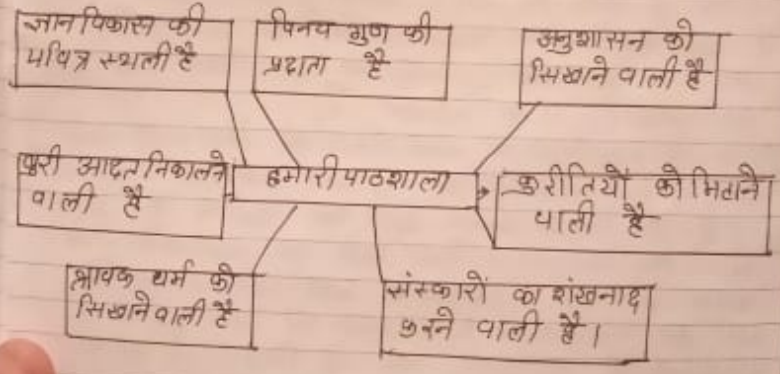

(3.) धर्म और संस्कृति की रक्षा के लिए पाठशाला का उद्देश्य ⇒

धर्म और संस्कृति की रक्षा के लिए पाठशाला का मुख्य उद्देश्य है यदि पाठशाला नहीं होगी तो हमारी जैन धर्म की संस्कृति का विलुप्त होने लगेगा इस प्रकार से पाठशाला होना आवश्यक है और इस पाठशाला के द्वारा ही हमारे एक अच्छे समाज का निर्माण होगा पाठशाला का उद्देश्य प्रत्येक व्यक्ति में धर्म के प्रति आस्था विश्वास प्रकट करना है और हमारे देवशास्त्रगुरु पर दृढ़ श्रद्धान कराना भी पाठशाला मुख्य उद्देश्य है। युवा पीढ़ी को भी पाठशाला में आगे आना अवश्यक है। इस प्रकार पाठशाला के विभिन्न उद्देश्य है।

(2.) सन्तान को जन्म देना धर्म नहीं है परन्तु संतान को संस्कार प्रदान करने से बड़ा कोई धर्म नहीं है

(3.) णमोकार मन्त्र के संस्कार मे निमित्त बनना तीनों लोक की सम्पत्ति के दान से भी महान है।

(4) संसार में हिंसा का 75% कारण दुरव्यसन और मोबाईल है उस पर नियंत्रण पाठशाला से ही सम्भव है।

(5) बच्चे पाठशाला में आकार के माता-पिता तथा गुरु का सम्मान करना सीखते है।

(6) बच्चे वृद्धावस्था में माता-पिता की सेवा नहीं करते है इस ज्वलन्त समस्या का समाधान एकमात्र पाठशाला है

(7) बड़ो की विनय करना छोटो का कर्तव्य है और छोटो को वात्सल्य देना बडो का कर्तव्य है ऐसे पावन संस्कार पाठशाला के द्वारा ही सम्भव है।

अत: हम पाठशालाओं की स्थापना करे यदि पूर्व से ही पाठशाला है तो. अपने घर के निकट जो भी पाठशाला है तो उसमे बच्चों को अवश्य भेजे यही हमारी धर्म देश, और संस्कृति के प्रति सच्ची कृतज्ञता और समर्पण होगा !

एक आदर्श अध्यापक

एक आदर्श अध्यापक की विशेषताएँ ⇒

शिक्षक उस प्रकाश स्तम्भ के समान होता है जिसके आश्रय में बैठकर विद्यार्थी अपने जीवन को आदर्श एवं संस्कारित बनाने का उद्यम करता है। शिक्षक की भूमिका एक अच्छे समाज, अच्छे नागरिक, आदर्श मानव निर्माण में सराहनीय एवं प्रशंसनीय होती है।

अध्यापक गरिमा व दायित्व समझे ⇒

अध्यापक को अपनी गरिमा व दायित्व (अधिकार) को समझना चाहिए और उसे अपने अंदर के गुणों को बाहर निकालना चाहिए जिससे हमारी पाठशाला को अच्छा रूप दे सके औ शिक्षक में अनेक गुण पाए जाते हैं!

पाठशाला के अध्यापक की विशेषताएं ⇒

(1) सच्चे देवशास्त्र गुरु के प्रति दृढ श्रद्धान रखना ⇒

पाठशाला के अध्यापक को अपने सच्चे देवशास्त्र गुरु पर दृढ श्रद्धा रखना आवश्यक है और पाठशाला में बच्चों को अध्ययन कराना देवशास्त्र गुरु पर दृढ श्रद्धा जाग्रत करावे और जैन सिद्धान्तों को बतावे जिससे उनके हृदय में जैन संस्कृति के प्रति दृढ श्रद्धा एवं बहुमान जाग्रित हो

(2) रहन सहन और खान पान का विशेष ध्यान ⇒

पाठशाला के पढ़ाने वाले अध्यापकों के लिए अपने खान-पान रहन सहन आदि का ध्यान रखना चाहिए उठने बैठने चलने एवं बोलने आदि क्रियाओं को समीचीन, अनुशासि बनाये हमेशा यहाँ विचार रखे की पाठशाला मात्र बच्चों की शिक्षा संस्कार के लिये ही अपितु य रहकर हमें बहुत कुछ सीखना है पाठशाला में पढ़ाने वाली शिक्षिका मोबाईल को लेकर पाठशाल नही जाये और बाजार आदि में चाट टिकिया आदि नही खाना चाहिए यदि बच्चे देख लेते है तो वह बाद में बोलते है दीदीयों को जीन्स भी नही पहनना चाहिए इस प्रकार से रहन सहन आदि का ध्यान रखना चाहिए।

(3) विनय गुण का सदा ख्याल रखना =>
पाठशाला में पढ़ाने वाले अध्यापकों को हमेशा दूसरों के प्रति विनय रखना चाहिए विनय गुण का ख्याल रखते हुए अपने से बड़े समाज के व्यक्ति कमेटी के सदस्यों का सदा आदर करना और रास्ते में कहीं पर मिलने पर जयजिनेन्द्र बोलना तथा आप कहाँ जा रहे आदि एवं मधुर वचनों का पालन करना इस प्रकार शिक्षक की विशेषताएं होना आवश्यक है।

पाठशाला अध्यापक के विशेषताएं बिन्दुओं में कुछ और

1. बच्चों को सरलता से समझाना।
2. आगम के अनुसार शिक्षक के तीन नियम रात्रि में भोजन नहीं करना, प्रति दिन देव दर्शन करना, छना पानी पीना।
3. बच्चों को उत्साह पूर्वक पढ़ाना।
4. समय पर पाठशाला आना।
5. स्वयं को अनुशासन में रखना।
6. बच्चों के समक्ष हँसी मजाक नहीं करना।
7. संस्कृति के अनुसार ही पोशाक पहनना।
8. सदा प्रसन्नता की मुद्रा में रहना।
9. पाठशाला में मोबाईल लेकर नहीं जाना।
10. मंदिर बिना चुन्नी के नहीं जाना।

अध्यापक के द्वारा अध्यापन कला

शिक्षा प्रक्रिया के तीन बिन्दु होते है। शिक्षक छात्र और विषय इन तीनों में सम्बन्ध स्थापित करना ही शिक्षण है यह एक त्रिमुखी प्रक्रिया है इसकी सफलता सुयोग्य शिक्षक पर निर्भर है।

शिक्षक को कक्षा मे अध्यापन कार्य करते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए।

5

(1) कक्षा में अध्यापक की दृष्टि छात्रों पर रहनी चाहिए
(2) गद्य शैली, पद्य शैली तथा संवाद शैली से पढ़ना चाहिए।
(3) पाठशाला में बच्चों को तरह कार्य न दें तो अच्छा है
(4) कक्षा के अंत में पढ़ाया गया विषय पूछ ले।
(5) शान्त हो जाओ ये शब्द न बोले ॐ शांति बोले!
(6) कोर्स को जल्दी पूरा करने की कोशिश न करें।
(7) पुस्तक से न पढ़ाये अपनी नोट्स डायरी से पढ़ायें ज्यादा प्रभावशाली होगा बच्चे ये न सोचें कि हम तो घर पर पढ़ लेंगे।
(8) बच्चों को समूह में डांटें - एकान्त में समझायें।

पाठशाला के अध्यापक कि विशेषताएं का वर्णन किया गया एक अच्छे अध्यापक को तन मन धन के साथ पाठशाला में पढ़ाना चाहिए आपका दिया हुआ ज्ञान किसी का जीवन बदल सकता है और इसमें और आप लगनशील होकर पाठशाला को चलाना चाहिए.

हम सबकी है यही प्रार्थना मेरा देश महान बने।
भारत का हर- बच्चा-बच्चा महावीर और राम बने।

वर्तमान समय अनुसार किस पद्धति से बच्चों को पढ़ाया
जाए।

आवश्यकता है - संस्कारों के शंखनाद की =>
वर्तमान में जहाँ एक ओर पाश्चात्य संस्कृति का बढ़ता प्रभाव
और दूसरी ओर जैन संस्कृति का ह्रास देखा जा रहा है। वहीं
आवश्यकता है- संस्कारों के शंखनाद की। ये संस्कार मिल
सकते हैं एक पाठशाला के माध्यम से ही। परन्तु बढ़ती
हुई भौतिकता की चकाचौंध, लौकिक शिक्षा केन्द्रों का
आकर्षण, टी.वी. के मनलुभावने कार्यक्रम वीडियो गेम
कम्प्यूटर शिक्षा विकसित खेल-कूद के साधन फैशन की
दुनिया, मोबाईल के बाजारों के बीच में शाश्वत आत्मिक
जैन धर्म की शिक्षा और संस्कार देने का काम इस पीढ़ियों
की भाँति कर्तव्य पूर्ति का पुरुषार्थ मात्र लगता है फिर भी जिस
कुल परम्परा में हमने जन्म लिया अपने जीवन को अच्छा
बनाया उसके प्रति अपने दायित्व को निभाना ही होगा
मात्र इस विश्वास के साथ

हम होंगे कामयाब हम होंगे कामयाब एक दिन
मन में है विश्वास पूरा है विश्वास हम होंगे कामयाब एक दिन

वर्तमान पद्धति की पाठशाला में शिक्षा

(1) पाठशाला का क्लास रूम =>
पाठशाला का क्लास सुंदर होना चाहिए जिससे बच्चों
को पढ़ने मे अच्छा लगे समुचित प्रकाश बच्चों को बैठने
के चटाई आदि होना चाहिए पाठशाला के क्लास रूम
की दीवारों पर दोहे आदि लिखवा लेना चाहिए प्रार्थना
और महाराज जी और धार्मिक चित्र के फोटो दीवारों
पर लगवाना चाहिए जिससे क्लास दिखने में सुंदर
और अच्छी लगे पाठशाला का क्लास रूम को
हमें बहुत अच्छे से रखना चाहिए

(2) शिक्षक प्रतियोगिताओं का आयोजन => पाठशालाओं में प्रतियोगिता समय-समय पर हमें अपनी पाठशालाओं में प्रतियोगिता का आयोजन कराना चाहिए जिससे बच्चे पाठशाला आते है और उत्साह आता है बच्चों में जब उनके लिए नई-नई प्रतियोगिताओं का आयोजन होता है और शिविर के माध्यम से बच्चो को सीखने की प्रेरणा मिलती है आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन कराना चाहिए।

(3) समर कैम्प का आयोजन =>
पाठशाला में हमें समर कैम्प का आयोजन करना चाहिए जिससे बच्चों को उत्साह पूर्वक आना होता है और वह उनके लिए कुछ कला सिखाना जैसे रंगोली, क्राफ्ट ड्राइंग, कार्ड मेकिंग, कैली ग्राफी, पुरानी पत्रिकाओं से लिफाफे बनाना, मेहन्दी लगाना दीपक सजाना, आदि का प्रशिक्षण हम समर कैम्प के माध्यम से दे सकते है इस प्रकार से बच्चों की संख्या पाठशाला में बढ़ती है।

(4) गणवेश, बैग, बैच =>
पाठशाला में बच्चों के पास गणवेश पहनाकर एवं बैच लगाकर आने को कहे तथा यदि बच्चे के पास नहीं है तो अध्यापक स्वयं बच्चों को पाठशाला के द्वारा बैग, बैच उपलब्ध कराए छोटे-छोटे बच्चों को बैच लगाने का शौक रहता है तो वह पाठशाला आने लगते है गणवेश पहनाकर के बच्चे आते है तो वो सुंदर लगते है और वह जब पाठशाला आते है तो बहुत खुश होकर के आते हो बच्चो को बैच लगाकर आने को कहे।

(5) रविवारीय भजन एवं स्वल्पाहार ⇒
रविवार अथवा अन्य शालीय अवकाश के दिन बच्चों एवं शिक्षकों के द्वारा सामूहिक रूप से भिक्षुया करवाना चाहिए बाद मे प्रभावना यात्रा आदि निकाल कर के जिस सज्जन के यहाँ स्वल्पाहार होना है वहाँ तक ले जाना चाहिए बच्चों को स्वल्पाहार मे स्वादिष्ट व्यंजन खिलाना चाहिए ताकि दूसरी अतिथि वह भजन मे मन बना ले।

(6) पुरस्कार वितरण ⇒
पाठशाला मे बच्चों को पुरस्कार वितरण अवश्य करना चाहिए जिसके द्वारा बच्चों मे उत्साह बना रहता है और बच्चे पाठशाला आते है पुरस्कार अधिक सस्ते नहीं होना चाहिए कमसेकम 50-60 रुपये तक की होने चाहिए महीने मे 1-2 बार वितरण करना चाहिए

(7) बाल सभा का आयोजन ⇒
पाठशाला में बालसभा का भी आयोजन होना आवश्यक होता शनिवार या फिर कोई औरदिन भी बालसभा का आयोजन कर सकते है बालसभा की कुछ व्यवस्था पहले ही कर लेना चाहिए जैसे संचालक, माईक आदि बालसभा होने के प्रारम्भ में मंगलाचरण, दीपप्रज्वलन, अध्यक्ष मुख्यअतिथि आदि तैयार करे और बाद मे पुरस्कार वितरण करें पाठशाला मे बच्चे आने लगते है

(8) गुरु दर्शन एवं तीर्थ यात्रा ⇒
~~वर्ष~~ मेंदो बार या फिर एक बार पाठशाला के बच्चों को गुरु दर्शन के लिए ले जाना चाहिए और वह जब जाते है तो इन्हे अच्छा लगता है और वह पाठशाला आते है तथा तीर्थयात्रा कराने ~~भी~~ ले जाना चाहिए और वह उनकी पाठशाला की गणवेश मे ही ले जाना चाहिए और हमारी पाठशाला मे बच्चो की संख्या बढ़ने लगती है

(9)

(9) पाठशाला का वार्षिक महोत्सव ⇒

किसी ने कहा है।

नई खुशी नई रंगत नये अरमान पैदा कर
फिर इस खाक के पुतले मे भगवान पैदा कर

भगवान बनने की यात्रा के लिए और नई पीढ़ी को संस्कारित करने के लिए हमारी पाठशाला तो है ही लेकिन इस यात्रा मैं हमेशा एक रसता रहेगी तो आनंद नही आ पायेगा बच्चों के साथ-साथ समाज मैं भी एक नवीन उत्साह का संचार हमें समय-समय पर करते रहना चाहिए जिसके लिए वर्ष मैं हमें वार्षिको[illegible] त्सव का आयोजन आवश्यक करना चाहिए और वह कार्य का आयोजन ऐसा होना चाहिए की दीवाली या होली भी कम न लगे और पुरस्कार वितरण करना चाहिए!

(10) डिजीटल क्लास ⇒

पाठशाला मे L.E.D. लगवाकर के बच्चों से हमे धार्मिक कथाऐ भी दिखा सकते है भजन गाना सिखा सकते है कर्टून वाली कहानी जिन बच्चो का पाठशाला नही आते है वो भी आने लगते है तो हम वर्तमान को देखते हुए इस प्रकार से बच्चों को पाठशाला मे अध्ययन करा सकते है

~अधंकार से प्रकाश की ओर ले जानीवाली

[पाठशाला]

पाठशाला शिक्षिका

कुमारी सोनम जैन

गलती हो क्षमा